Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय-द्वितीय

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित शोध कार्य

अध्याय - द्वितीय
प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित अध्ययन

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

2.1 परिचय :-

आज के समय में देश की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा है, क्योंकि बिना शिक्षा के सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा समस्याओं के दौर से गुजर रही है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा समस्याओं के सम्बन्ध में कई अध्ययन किये गये हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिये उपयोगी और महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह उसके अनुसंधान की मौलिकता को आधार प्रदान करता है। क्षेत्र में हुये कार्य, उसकी विधि तथा निष्कर्ष के आधार पर अनुसंधानकर्ता, समस्या चयन, उसकी रूपरेखा तथा शोध विधि का निर्माण करता है। इस अध्ययन में भारत की मूल जातियाँ जो प्राचीन समय से इस देश में निवास करती आयी हैं तथा जिनकों भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति कहा गया और उनकी उन्नति के लिये कई प्रावधान और सुविधायें दी गई हैं। इस संवैधानिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कई कानून बनाये गये हैं, जिससे इन जातियों की शिक्षा, पदोन्नति, नियुक्ति एवं प्रवेश में रियायतें और छूट दी गई है। इन अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों और सामाजिक सांस्कृतिक विरासत की रक्षा भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिये एक नैतिक उत्तरदायित्व है। इसी पृष्ठभूमि से अन्वेषकों ने विभिन्न अनुसूचित जाति के आयामों के अध्ययन स्वतंत्र रूप से तथा वैभिन्नता के आधार पर किया है।

देश-विदेश में हुये अनुसंधान निम्न प्रकार हैं :-

2.2 विदेश में किये गये अध्ययन :-

डायन्स, चेक और डींट (1956) के द्वारा किये गये अध्ययन से निष्कर्ष निकाले कि व्यावसायिक आकांक्षा के स्तर का जीवन के

प्रारम्भिक वर्षों में पालक के साथ हुई अंतर्क्रिया के विभिन्न पक्षों से सार्थक सम्बन्ध होता है।

हालर और सेवेल (1957) ने शहरी एवं ग्रामीण हाई स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा की तुलना की। उसने पाया कि बालिकाओं की शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा तथा आवास क्षेत्रों में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। बालकों की व्यावसायिक आकांक्षा की उपेक्षा शैक्षिक आकांक्षा का आवासीय पृष्ठभूमि से अधिक सम्बन्ध है तथा बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा की व्याख्या नहीं की जा सकती।

जुल्का (1961-62) ने 7 से 11 वर्ष से ऊपर दो समूह के 140 भील जाति के बालकों का अध्ययन किया और उनमें बौद्धिक क्षमता, प्रेरणा स्तर दूरदर्शिता में कमी पाई गई। आकांक्षा का स्तर उच्च पाया गया। भावुकता पर कमजोर नियंत्रण पाया गया व अधिक तनाववयुक्त पाये गये।

बेंडर और **साथियों (1967)** ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन किया। अध्ययन ने निम्न निष्कर्ष निकाला।

Regional Institute LIBRARY Bhopal

- व्यावसायिक आकांक्षा और व्यावसायिक क्षमता में घनिष्ठ सम्बन्ध नही होता।
- ग्रामीण युवाओं की व्यावसायिक उपलब्धि का सीमांकन, आकांक्षा स्तर की उपेक्षा क्षमताओं की कमी के द्वारा होता है।
- निम्न आय वर्ग के एवं उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

फैन्टमी एम.डी. और **बेन्सटन (1968)** ने पाया कि आदिवासियों का पिछड़ा होना उनमें शिक्षा का प्रसार न हो पाना है। आवश्यकता

उनमें स्वतः को जागृत करने की है, जिससे कि उन्हें परिधि से केन्द्र की ओर लाया जा सके।

बन्सटिन (1962) ने आदिवासियों की भाषा सम्बन्धी समस्या का अध्ययन किया और पाया कि छोटी कक्षाओं में बच्चों पर उनकी घरेलू भाषा का अधिक असर पड़ता है। इसके लिये शिक्षकों को क्षेत्रीय भाषा का सहारा लेना चाहिये।

रोट्टर (1983) ने पाया कि पिछड़े क्षेत्रों के छात्र अपने कार्यों की प्रशंसा शीघ्र चाहते हैं अपेक्षाकृत गैर आदिवासी के।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

2.3 भारत में किये गये अध्ययन :-

ड्राकप (1931) ने भीलों के भोजन के बारे में अध्ययन किया और पाया कि भील जंगलों में निवास करते हुये कंद, फल, जंगली जड़ी-बूटियाँ का सेवन करते हैं तथा मंदिरा पान को समाज में बुरा नहीं समझा जाता।

सन् 1960 के पूर्व अदिवासी शिक्षा पर क्रमबद्ध तरीके से बहुत कम शोधकार्य हुआ है फिर भी कुछ लोगों ने आदिवासी शिक्षा पर कार्य किया, उनमें से **आय्यन (1948), हेमनडोर** और **वान (1948) ग्रेकशन (1947), एल्विन (1954)** ने आदिवासियों की शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में काम किया।

कुल लेख आदिवासी विद्यालयों के सम्बन्ध में प्रकाशित हुये, उनमें **मजूमदार (1957)** ने आदिवासियों की स्थिति के सम्बन्ध में उल्लेख किया।

लूम्बा (1966) ने भारतीय समाज की संरचना को समझने के लिये आठ क्षेत्रों के विशेष लक्षणों को बताया तथा भारतीय मनावैज्ञानिकों के लिए सुझाव दिया और उन्होंने आदिवासियों के रीति-रिवाज,

धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक संरचना, जनांकिकीय एवं नृवंश अध्ययन में अधिक पिछड़ा पाया। स्वतंत्रता के बाद किया गया आदिवासियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन ब्रिटिशकाल की उपेक्षा कहीं अधिक विकसित एवं उन्नति किस्म का था।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने सन् 1964 में एक इकाई स्थापित की और एक क्रमबद्ध तरीके से आदिवासी शिक्षा पर काम शुरू किया। **अम्बस्ट (1966), श्रीवास्तव (1968), नायक (1969)** ने आदिवासी शिक्षा पर काम किया।

सत्तरवे दशक में आदिवासी छात्रों की सामाजिक आर्थिक दशा और उपलब्ध सुविधा के उपयोग, आदिवासी तथा गैर-आदिवासी छात्र और अध्यापकों की पारम्परिक बातचीत और उनकी अकादमिक समस्याओं पर कार्य हुआ है।

गोकुल नाथन (1971) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन इस आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की प्रेरणा से सम्बन्धित उपलब्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

न्यायादर्श में असम के उच्चतर माध्यमिक विद्यलाय में अध्ययनरत् 294 लड़के और 89 लड़कियों को शामिल किया।

अध्ययन में निम्नलिखि उपकरण प्रयोग किये -

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

1. मेहता का प्रसंगात्मक बोध परीक्षण
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिये हाईस्कूल प्रमाण-पत्र का उपयोग किया गया। अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम थे -

   (1) आदिवासी विद्यार्थियों ने गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक उपलब्धि में अंक प्राप्त किये।

(2) ग्रामीण और आदिवासी विद्यार्थियों की ग्रामीण आदिवासी विद्यार्थियों से अधिक शैक्षिक उपलब्धि थी।

(3) आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं आया, जबकि शहरी आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया।

आई.सी.एस.एस.आर. (1972) भारतीय सामाजिक विकास अनुसन्धान परिषद् ने भी जनजाति के अनुसन्धान के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्र का संकलन किया है जो निम्नानुसार है :-

1. आदिवासी या जनजाति के स्व एवं उनकी जानकारी या परिचय का अध्ययन।
2. विभिन्न अनुसूचित जनजाति के बीच अंर्तसम्बन्धों के प्रतिमानों का अध्ययन।
3. आदिवासियों की कला-कौशल और तकनीकी का अध्ययन।
4. आदिवासियों की शिक्षा स्तर का अध्ययन।

Regional Institute LIBRARY Bhopal

पाण्डा (1992) ने आदिवासी स्कूलों का आदिवासियों पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शिक्षा की सभी सुविधाओं के उपलब्ध होने के बावजूद जैसे पाठ्यपुस्तकें निःशुल्क उपलब्ध, छात्रावास, गणवेश, छात्रवृत्ति के होने के बाद भी छात्रों में अवरोधन एवं अपव्यय में कमी नहीं आई।

दुबे (1974) असम के आदिवासी एवं गैर-आदिवासी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की व्यावसायिक और शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया।

जनजाति, भूमिहीन एवं अशिक्षित व्यक्ति एवं प्राथमिक शिक्षा देने के विचार से असहमत हैं। D – 222

अविनाश कुमार गर्ग (2000) : "बैतूल जिले के आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक पाश्वीचित्र का विकासात्मक अध्ययन :–

उद्देश्य :–

1. स्व–अवधारणा पर जाति, लिंग एवं उनके बीच अन्तर्क्रिया के सार्थक प्रभाव का अध्ययन।
2. शैक्षिक उपलब्धि पर जाति, लिंग, आय एवं इनके बीच अन्तर्क्रिया के सार्थक प्रभाव का अध्ययन।
3. शैक्षिक आकांक्षा पर जाति, लिंग, आय एवं इनके बीच अन्तर्क्रिया के सार्थक प्रभाव का अध्ययन।

निष्कर्ष :–

Regional Institute of ... LIBRARY Bhopal

1. स्व–अवधारणा पर जाति का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. स्व–अवधारणा पर लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. स्व–अवधारणा पर जाति एवं लिंग के बीच की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अम्बास्ट (1966) : आदिमजाति के शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने रॉची जिले के भागारू बरलिया होम की शिक्षा प्रणाली की समस्या जानने के लिये सर्वेक्षण किया। भागारू सामाजिक विचारधारायें जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया, जिसके माध्यम से आंकड़े एकत्रित किये।